मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है

– स्वामी विवेकानन्द

राजस्थान विश्वविद्यालय के पोर्टल के अवलोकन करने का आपको निमंत्रण देते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता व गर्व का अनुभव हो रहा है। राजस्थान विश्वविद्यालय देश के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है। विज्ञान, समाज विज्ञान, शिक्षा, प्रबंधन, इंजिनियरिंग, कला, वाणिज्य, विधि एवं ललित कला के परम्परागत एवं समकालीन क्षेत्रों के अन्तरराष्ट्रीय मानदंडों एवं मान्यता के अनुरूप इस विश्वविद्यालय का उच्च शिक्षा में यशस्वी रिकार्ड रहा है। भारतीय स्वतन्त्रता के ऐतिहासिक वर्ष 1947 में स्थापित इस विश्वविद्यालय के प्रख्यात् शिक्षकों ने प्रारंभ से ही राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक अभिनव अकादमिक कार्यक्रमों की परम्परा को जारी रखा। इस विश्वविद्यालय के विकास को बनाये रखने में इन प्रयत्नों ने विशेष योगदान दिया है।

प्रोफेसर वी.टी. राजू इस विश्वविद्यालय तथा राजपूताना राज्य के प्रथम प्रख्यात् शिक्षक थे। 1956 में वे भारत के तृतीय उच्च नागरिक सम्मान पद्मभूषण से अलंकृत किये गये। तब से अनेक विशिष्ट शिक्षाविद् इस विश्वविद्यालय से जुड़े रहे। इनमें से कुछ प्रमुख हैं – अर्थशास्त्र के प्रो. राजकृष्णा, प्रो. राजा चलैया, प्रो. सी. रंगराजन, समाजशास्त्र के प्रो. योगेन्द्र सिंह, रसायन शास्त्र के आर.सी. मेहरोत्रा, भौतिक शास्त्र के प्रो. बी.एल. सर्राफ तथा प्रो. लोकनाथन, इतिहास में प्रो. जी.सी. पांडे, साहित्य में प्रो. माता प्रसाद गुप्ता, प्रो. सत्येन्द्र तथा प्रो. आर.के. कौल, विधि में प्रो. एम.सी. जैन, दर्शनशास्त्र के प्रो. दयाकृष्ण, वाणिज्य में प्रो. ओम प्रकाश व प्रो. आर.जी. सरीन प्रमुख हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रदेशों व विदेशों के विद्यार्थी अध्ययन के लिए पंजीकृत हैं। हमारे यहां के स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के सभी क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों की विविध परीक्षाओं में लगभग 10 लाख विद्यार्थी प्रतिवर्ष बैठते हैं। यहां स्नातक स्तर पर अध्ययन के लिए छः संघटक कॉलेज हैं जहां विविध विषयों के समुच्चय की सुविधा है जैसे – प्रौद्योगिकी में (बी. टेक–एम.टेक) तथा विधि (बी.ए.–एल.एल.बी.) जैसी दोहरी (ड्यूल) उपाधियां। स्नातकोत्तर स्तर के यहां 37 विभाग तथा 22 केन्द्र हैं जहां कुल मिलाकर 100 से अधिक पाठ्यक्रमों में स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट डिग्री तक गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण तथा शोध कार्य उपलब्ध कराया जाता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति हमारा समर्पण ज्ञान पिपासु विद्यार्थियों के लाभ के लिए तथा लचीले उच्चस्तरीय पाठ्यक्रमों एवं उनमें नामांकन में घातीय वृद्धि के अलावा उच्च शिक्षा के लिए हमारे संकल्प का प्रमाण है।

यह विश्वविद्यालय शोध के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। हमें भारत सरकार तथा अन्य सार्वजनिक उपक्रमों से शोध कार्यों के लिए 150 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त हो रही है।

राजस्थान विश्वविद्यालय देश के उन विश्वविद्यालयों में है जिन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने यू.पी.ई. का दर्जा दिया है।

उभरते क्षेत्रों में अभिनव अकादमिक गतिविधियों के लिए वर्ष 2006 में राजस्थान विश्वविद्यालय ने कन्वर्जिंग टैक्नोलॉजी – नैनो जैव सूचना संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान (एन.बी. आई.सी. – नैनो–बायो–इन्फो–कॉगनिटिव न्यूरो साइंस) पर आधारित अपनी तरह का पहला अनूठा केन्द्र स्थापित किया है। इस केन्द्र को अन्तरराष्ट्रीय समुदाय ने सराहा है।

हमने मन और शरीर के विकास में खेलों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हमारे संकाय और छात्रों के लिए आधुनिक बुनियादी सुविधाओं और उपकरणों की व्यवस्था की है। सभी खेलों के लिए यहां प्रशिक्षक और कोच भी हैं। इण्डोर खेलों के लिए भी यहां सुविधाएं हैं।

विश्वविद्यालय का यह उद्देश्य है कि वह व्यक्तियों की नेतृत्व तथा प्रबंधकीय क्षमता को अधिकतम वृद्धि करे तथा कक्षा अध्यापन, सामूहिक कार्य, कार्यशालाओं तथा चर्चाओं के माध्यम से आज की वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में आवश्यक व्यावहारिक कौशल विकसित करने के संदर्भ में आधुनिक सिद्धान्तों का पता लगाये।

विश्वविद्यालय में अपने शैक्षिक कार्यक्रमों को समाज की जरूरतों को पूरा करने के अनुरूप परिवर्तित करने के लिए एक विशिष्ट संस्कृति है। सामाजिक बहिष्कार और समावेशी अध्ययन (सोशल एक्सक्लूजन तथा इन्क्लूजिव स्टडीज ए.पी.टी.सी.), प्रशासनिक सेवाओं में पूर्व प्रवेश प्रशिक्षण केन्द्र (एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज प्री एन्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर) जैसे कार्यक्रम समाज में वंचितों को समाज की मुख्य धारा के साथ जोड़ने के हमारे प्रयासों की गवाही है। इस प्रकार समाज के सभी वर्गों एवं लिंग को समान एवं संतुलित अवसर प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय अतिरिक्त प्रयास कर रहा है।

विश्वविद्यालय में उपकरणों, आधारभूत ढांचा, पुस्तकालय सुविधाओं में वृद्धि सहित अध्यापन व प्रशासन में स्वस्थ परम्पराओं की परिकल्पना और क्रियान्विति की लोकतांत्रिक सामूहिक भावना की सभी ओर से प्रशंसा की गयी है। यह किसी भारतीय विश्वविद्यालय की विश्वसनीयता के निर्णय की अनिवार्यता है।

शिक्षा, नैतिक मूल्यों और समावेशी समाज की नींव का प्रमुख आधार है – सीखने का जुनून – और यही हमारा स्वभाव अथवा प्रकृति है।

मैं इस वेबसाइट के माध्यम से इस अवसर पर उन सभी विद्यार्थियों, शिक्षाविदों तथा अन्य सभी का स्वागत करना चाहता हूँ। राष्ट्रपिता ने कहा था कि दूसरों के साथ सद्भाव के साथ रहना – यही सच्ची शिक्षा का आधार है और मुझे उम्मीद है की आप यहाँ अपनी क्षमता को महसूस कर सकेंगे, उसे एक दिशा दे सकेंगे और सीख सकेंगे।

मुझे विश्वास है शिक्षा के इस मंदिर में आपका अनुभव स्मरणीय रहेगा।

जे.पी. सिंघल
कुलपति

"Education is the manifestation of the perfection already in man."

– Swami Vivekananda

It is a matter of great pleasure and pride for me to invite you to walk through the portals of **University of Rajasthan**. As one of the oldest Indian universities in the country, it has a glorious record in higher education – both in traditional and contemporary areas of science, social science, education, management, engineering, arts, commerce, law and fine arts – with international standards and recognition. Established in the historical year of India's independence (1947), it has seen renowned teachers continue the tradition of initiating innovative academic programmes of national and international relevance. These programmes have contributed immensely to the university's development.

Professor VT Raju was the first eminent teacher of the university as well as of the Rajputana State. He was awarded the third highest civilian award in India, the Padma Bhushan, in 1956.

A galaxy of academicians has been part of the university since then. Some of the prominent ones are: Prof. Raj Krishna, Prof. Raja Chelliah and Prof. C. Rangarajan in Economics; Prof. Yogendra Singh in Sociology; Prof. R.C. Mehrotra in Chemistry; Prof. B.L. Saraf and Prof. S. Lokanathan in Physics; Prof. G.C. Pande in History; Prof. Mata Prasad Gupta and Prof. RK Kaul in Literature; Prof. M.C. Jain in Law; Prof. Daya Krishna in Philosophy; Prof. Omprakash and Prof. R.G. Sareen in Commerce.

The university has around 1 million students from many parts of India and abroad enrolled in different undergraduate and postgraduate courses. There are six constituent colleges for the undergraduate studies, which offer a variety of combinations of subjects like the dual degree programmes in technology (B.Tech-M.Tech) and law (BA-LLB). For PG studies, there are 37 departments and 22 centres providing quality training and research leading to Master's and Doctorates in more than 100 courses.

Our flexibility in offering advanced courses for the benefit of knowledge-seekers underlines our commitment to quality higher education.

The university is known internationally for its research in different subjects and attracts funding to the tune of Rs 15 billion from various agencies, including government departments.

The University of Rajasthan is among the few Indian universities that have been accorded the status of University with Potential for Excellence by the University Grants Commission (UGC).

In 2006, the university established a unique centre on converging technologies – Nano-Bio-Info-Cognitive Neuroscience – for innovating academic activities in emerging fields. The international community has appreciated this effort.

We reckon the importance of sports in the growth of mind and body and have provided modern infrastructure and equipment to our faculty and students. There are trainers and coaches for all games. There's also a facility for indoor games.

The university aims to maximize leadership and management potential of individuals and explore modern theories in the context of practical skills required in today's world of cutthroat competition through a series of classroom teachings, group activities, workshops and discussions.

The university has a culture of moulding its academic programmes to address needs of society. Programmes likes Social Exclusion and Inclusive Studies, Administrative Services Pre-entry Training Centre bear testimony to our efforts to innovate in order to alleviate the underprivileged in society. There's also an extra effort to provide equal opportunities to all sections, irrespective of their gender, caste or creed.

The university's focus on state-of-the-art equipment, infrastructure and library facilities, and on healthy and democratic practices in teaching and administration has been applauded at various forums – the sine quo non for any university's credibility.

A passion for learning, which is the foundation of education, moral values and an inclusive society, is our ethos.

I wish to take this opportunity to welcome students, academicians, and others to the University of Rajasthan through this website. Here you will realize and shape your potential and learn, as Father of the Nation had said, to live in harmony with others – hallmark of true education.

I promise you a memorable experience at this temple of learning.

(J.P. Singhal)